बबली
का बाजा
पढ़ना है समझना

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-882-9

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

बबली का बाजा
पापा
बबली
मम्मी

एक दिन बबली के घर में सफ़ाई हो रही थी।
सारे घर का सामान आँगन में निकला हुआ था।
रसोई का सामान भी आँगन में ही था।

रसोई के सामान में बहुत सारे डिब्बे निकले थे।
बबली डिब्बों के ढेर के पास बैठ गई।
बबली ने अपने लिए एक नीला डिब्बा उठा लिया।
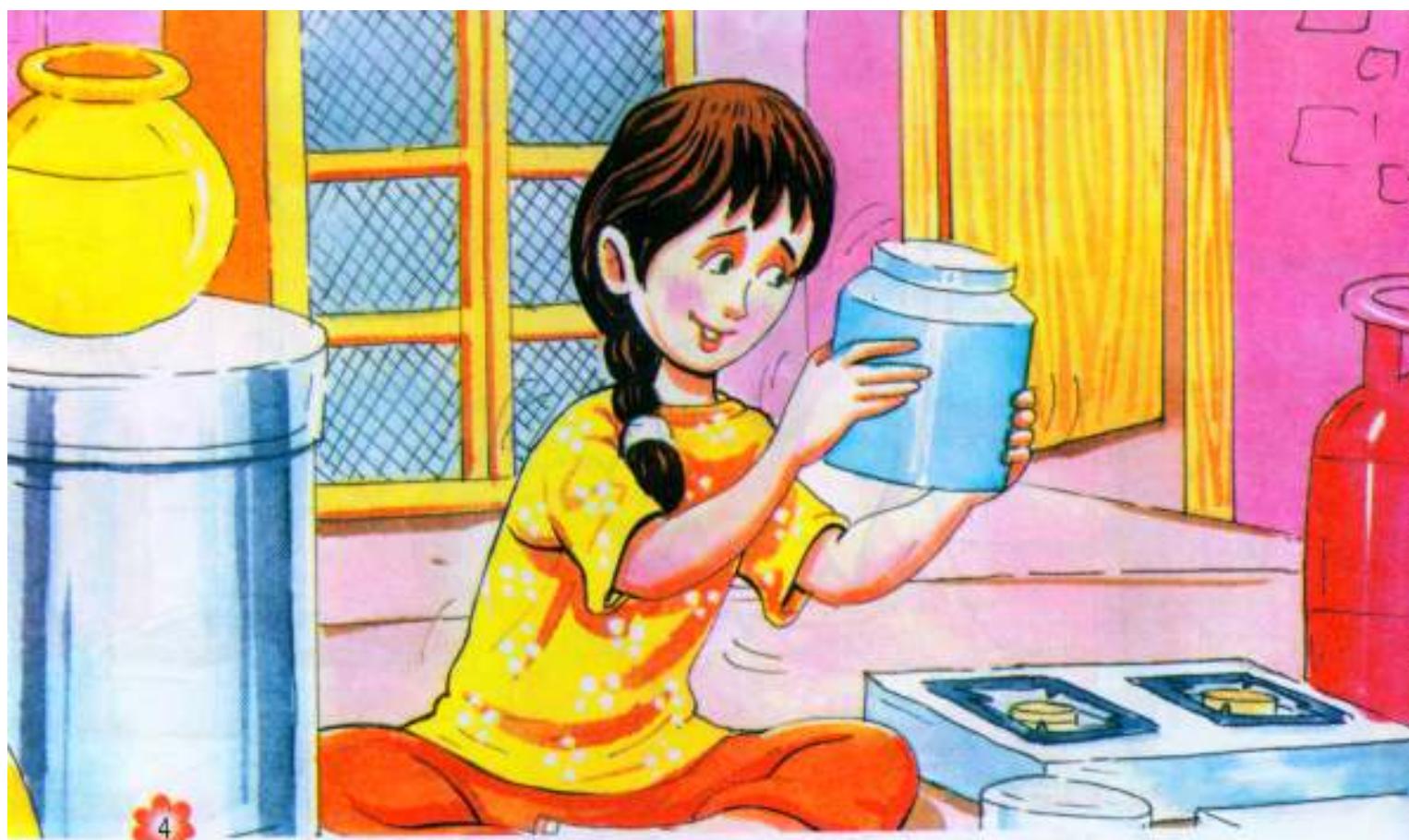
बबली ने डिब्बे को हिलाकर देखा।
डिब्बा हिलाने पर छन्न-छन्न की आवाज़ आई।
बबली ने डिब्बे को खूब बजाया।

बबली सारे घर में डिब्बा बजाती घूमी।
बबली सोचने लगी कि डिब्बे में क्या होगा।
उसने डिब्बा खोलकर देखा।

डिब्बे में चावल के दाने थे।
बबली ने डिब्बे को बंद कर दिया।
पहले की तरह उसे बजाती रही।

बबली डिब्बे को अपने साथ लेकर सोई।
रात को बबली के बिस्तर पर एक चूहा आया।
चूहा डिब्बे के सारे चावल खा गया।

बबली ने सुबह देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था।
चावल के दाने गायब थे।
उसने माँ से और चावल माँगे।

माँ ने चावल देने से मना कर दिया।
माँ बोली चावल खेलने की चीज़ नहीं है।
चावल तो खाने के लिए होता है।

बबली बहुत उदास हो गई।
वह छत पर जाकर बैठ गई।
वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।
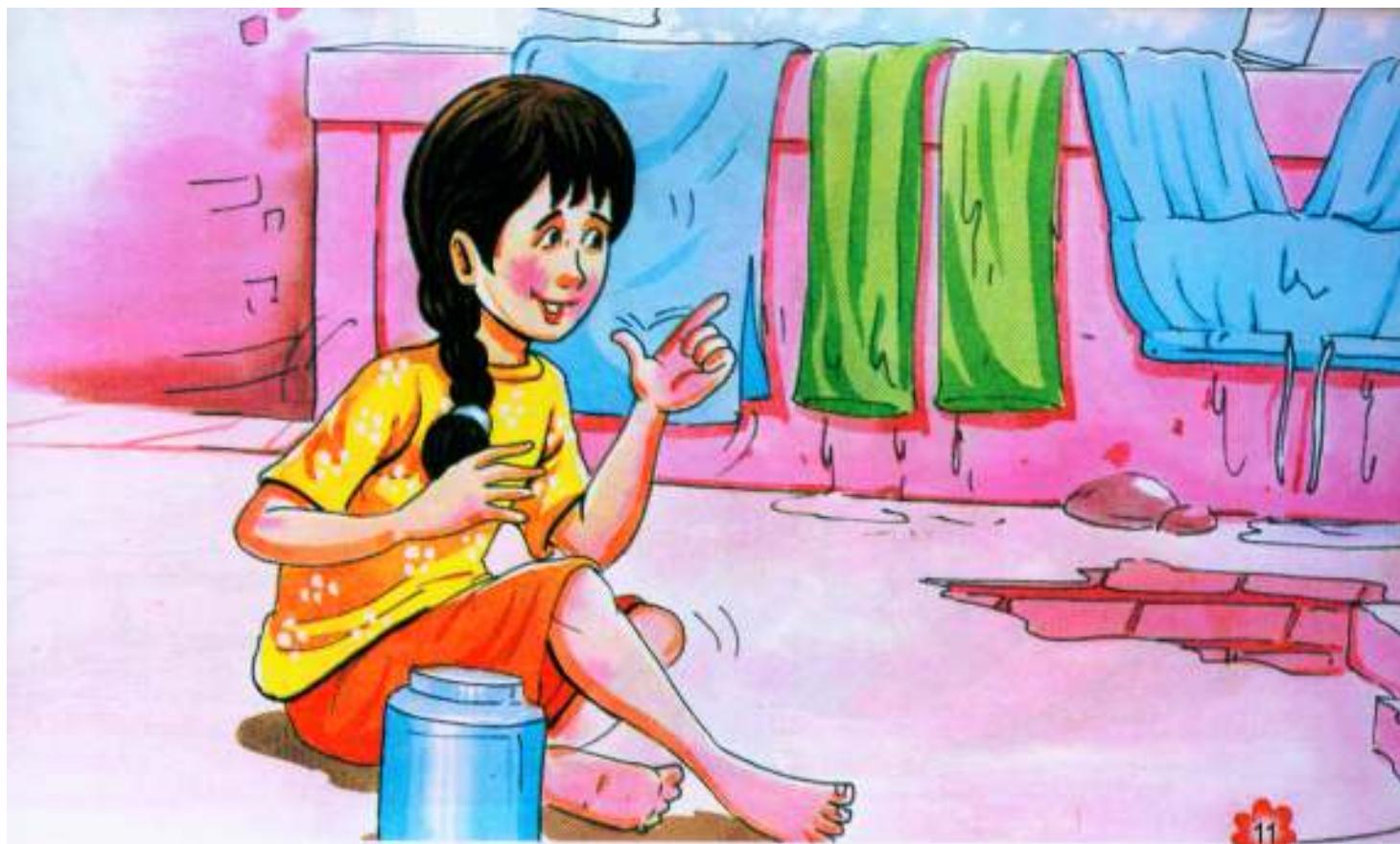
बबली की नज़र सलवार पर पड़ी।
सलवार का नाड़ा लटक रहा था।
बबली को एक तरकीब सूझी।

बबली ने नाड़ा खींचकर निकाल लिया।
उसने नाड़े का एक सिरा डिब्बे से बाँध दिया।
नाड़े का दूसरा सिरा डिब्बे के दूसरी तरफ़ बाँध दिया।

डिब्बे से एक ढोलक बन गई।
बबली ने ढोलक अपने गले में पहन ली।
वह ढोलक बजा-बजा कर छत पर नाची।

बबली ढोलक बजाते हुए नीचे उतरी।
नीचे अभी भी सफ़ाई हो रही थी।
सामान अभी भी आँगन में ही पड़ा हुआ था।

माँ डिब्बों को साफ़ कर रही थी।
पापा डिब्बों को अंदर ले जाकर रख रहे थे।
जीत सामान में कुछ ढूँढ़ रहा था।
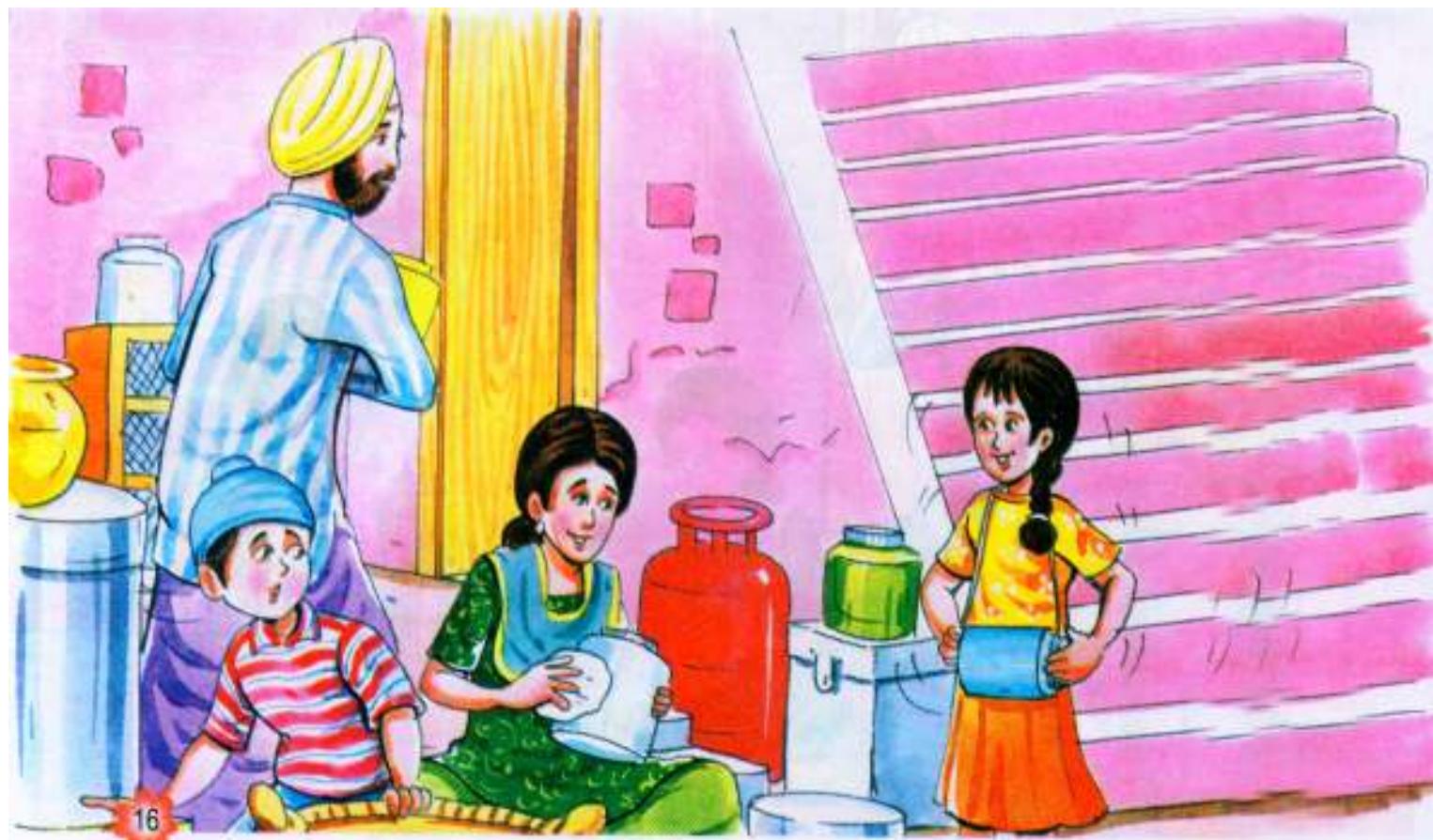
सारे लोग बबली की ढोलक की आवाज़ सुनने लगे।
ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप-ढप
बबली गाना भी गा रही थी।
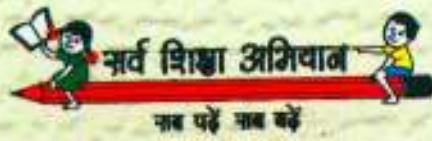
स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
2081
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING